चने वाला

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

चना, चीना, चाना, चने की जब कई क़िसमों की आवाज़ें मेरे कान में गानों के अंदाज़ में गूजीं तो मैं चलती गाड़ी में गुनूदगी के आलम से जाग उठा और चौंक कर उस नौ उम्र लड़के को देखने लगा जो एक छोटे से झाबे में चने लिये हुये चने के मुख़तलिफ़ लहजे में गिरदान कर रहा था और ट्रेन के ज़्यादा तर मुसाफिर जिसमें अक्सर व बेशतर डेली पसैन्जर थे, बड़े ज़ोर शोर से चना खरीद रहे थे। वह लड़का चने बेचने के साथ साथ चने की शान में क़सीदे भी पढ़ता जा रहा था और उस की आवाज़ चलता हुई ट्रेन के शोर शराबे पर भी भारी थी।

में भी अपने पास बैठे हुये मुसाफिरों की गुफ़तुगू में शामिल हो गया। जो वो लोग चने की तारीफ़ में कर रहे थे। मसलन कितना करारा है, चटपटा है, सोंधा है, मज़ेदार है वगैरा वगैरा। पूरा कम्पार्टमेन्ट चने की खुशूब से बस चुका था। में ने कहा चना वाक़ई बहुत सोन्धा है। इस पर बगल में बैठे लाला नुमा मुसाफिर ने कहाः जी आप ने तो चना खाया ही नहीं, कैसे कह रहे हैं कि चना बड़ा सोन्धा है। में ने कहा : वह तो उसकी खुशबू ही से पता चल रहा है। लाला जी बोले : खुशबू वुशबू कुछ नहीं लो थोड़ा सा टेस्ट करो। और उन्ही हाथों से जिन से वह खुजला रहे थे थोड़ा सा चना मेरी तरफ बढ़ाया। और मुझे बस क़ै होते होते रह गई। में ने बड़ी बदएखलाक़ी से चना पकड़ने से इनकार कर दिया। अब भी कभी में सोचता हूं तो अपनी उस बे मुरर्वती पर काफी अफसोस होता है। कोई बहाना करके चना लेने से इनकार कर देता। बहर हाल जब पूरे ड़ब्बे में एक आदमी भी चने की बुराई करने वाला नज़र नहीं आया तो मैं सोचने पर मजबूर हो गया। कि चना वाक़ई अच्छा होगा वरना लोग आम तौर से किसी की तारीफ करने में इतना सख़ी नहीं होते और बुराईयां करनी हो तो एक दूसरे पर सबक़त ले जाते हैं। मैं ने भी आखिर कार उस से चना खरीद ही लिया। ये थी मेरी उस चने वाले से पहली मुलाक़ात।

एक ट्रेनिंग के सिलसिले में मुझे रोज़ाना इलाहाबाद से मिर्जापुर तक अप डाउन करना पड़ता था। ट्रेन में डेली पसेन्जर्स के हंगामें रहते थे। लगता था कि उन के तफरीह के मशागल सिर्फ ट्रेन ही में होते हैं। शोर हंगामें के साथ डिब्बे में दाखिल होते हैं। डिब्बा कितना ही भरा क्यों न हो हर आदमी लड़ झगड़ के अपनी जगह बना लेता था। और इस तरह बैठता कि दो दो चार चार की जोड़ी बन जाये ताकि ताश की फड़ जम जाये। जो ताश नहीं खेल रहे होते उन में से कोई देश की हालत पर रनिंग कमेन्ट्री शुरू कर देता या फिर कोई डींगें मारता कि उसने दफ़्तर में अपने बास को कैसे हड़काया और कभी कोई शख्स बे सुर ताल के बेहंगम सा गाना गाने लगता और उसी शोर शराबे के बीच चने वाला भी अपनी अनोखी आवाज़ में मुसाफिरों को चौंका देता।

मैं एक महीने से रोज़ाना सफर कर रहा हूं। उस चने वाले से मेरी अच्छी खासी दोस्ती हो चुकी थी। क्योंकि मैं भी बाक़ायदगी से उस से चना खरीदने लगा हूँ। इस एक महीने के सफर में

महसूस हो रहा है कि मैं भी अच्छा खासा शातिर डेली पसैन्जर होकर रह गया हूँ। मेरे अन्दर जो शाइस्तगी थी वह धीरे धीरे ख़त्म होती जा रही है। पहले कम्पार्टमेन्ट में अगर जगह नहीं होती थी तो ख़ड़ा रहता था अब घुसपैठ करके जगह बना लेता हूँ। और अगर कोई मुसाफिर सीट या जगह देने में आना कारी करता है तो दो चार धक्के भी लगा देता हूँ। कई नई तरह के अल्फाज़ सीख चुका हूँ। उनका इस्तेमाल कभी बेख़्याली में घर पर कर देता हूँ। तो लोग शुशदर्रा रह जाते हैं। हाँ तो बात उस चने वाले की हो रही थी। उस एक महीने के दौरान मेरी उस से काफी दोस्ती हो चुकी थी। मैं ने उस से पूछा कि चने की शान में जो वह शायरी करता है, उसने कहां से सीखी। उसने बताया कि ये सब शायरी उसके बाप ने ईजाद की है जो उस से पहले चना ही बेचने का काम करते थे। और फिर ये जानकर मुझे बहुत अफसोस हुआ जब उसने बताया कि उस का बाप तेज़ चलती ट्रेन पर चढ़ते हुये फिसल गया और ट्रेन के नीचे आकर कट गया। फिर सारे घर की ज़िम्मेदारी उस पर आ गई। उसने बताया जब उसके बाप का देहान्त हुआ तो वह पांचवे दरजे में पढ़ता था और उस का बाप अगर न मरा होता तो वह आज दसवीं दरजे में होता और आगे पढ़ता रहता।

गाढ़ी की रफ़्तार अब कुछ धीमी हो गई थी। थोड़ी देर में विन्ध्यान्चल स्टेशन आने वाला था। मैं ने सोचा कि थोड़ी देर में चने वाला डब्बे में दाखिल होगा। दूसरे डब्बों से बेचता हुआ वह अक्सर विन्ध्यान्चल के स्टेशन पर हमारे डब्बे में दाखिल होता था और अपनी सदा लगाकर डब्बे में हलचल पैदा कर देता था। यकायक ट्रेन आहिस्ता होकर रूक गई। आस पास कोई गाँव था। शायद किसी ने ट्रेन की ज़न्जीर खींच दी थी तभी गालिबन बगल के डब्बे से काफी शोर और चीख़ व पुकार की आवाज़ें आने लगी। उस कम्पार्टमेन्ट से उतर कर चार पांच आदमी हाकी और डन्डे लिये हुये उस गाँव की तरफ भागते चले गये। नीचे खड़े रेलवे पुलिस के जवान जो शोर सुन कर वहाँ आ गये थे उनकी हिम्मत न हुई कि उन भागते हुये आदमियों को रोक सकें। अब लोग अपने अपने डब्बों से उतर उतर कर बगल वाले डब्बे की तरफ जा रहे थे। में वहां पहुंचा तो देखा कि चने वाला खून में लतपत फर्श पर पड़ा हुआ था। पता चला कि उन चार पाँच आदमियों ने चने वाले की बे तहाशा पिटाई की थी और जन्जीर खींच कर गाड़ी रोकी और भाग निकले। किसी भी मुसाफिर ने चने वाले को बचाने की हिम्मत नहीं दिखाई। ट्रेन में जितनी मरहम पट्टी हो सकती थी की गई। फिर गाड़ी चल पड़ी। विध्यान्चल स्टेशन आ गया। दो तीन मुसाफिरों ने जो गालिबन चने वाले के गाँव के थे उस को ट्रेन से उतार लिया ताकि क़रीबी अस्पताल में उसे भरती कराया जा सके।

दस रोज़ तक चने वाला नहीं आया। मुझे इत्तिफाक़ से किसी मुसाफिर से पता चला कि चने वाला ज़िन्दा है और अस्पताल में भरती है। उसके घर का खर्च कैसे चल रहा होगा मुझे उस बारे में इल्म नहीं था। ग्यारहवे रोज़ चने वाला फिर कम्पार्टमेन्ट में दाखिल हुआ और उसके सर पर पट्टी बंधी हुई थी। हाथ में प्लास्टर चढ़ा हुआ था जिस में वह चने की झबिया फंसाये हुये था। मैं ने उस से चना खरीदा और उसे अपने पास बैठा लिया। अभी तुम पूरी तरह ठीक नहीं हो। कुछ दिन आराम करो। मैं ने उसे हमदर्दाना मशवरा दिया। वह मुस्कुराया था जिसे देखकर मैं लरज़ गया। किस क़द्र दर्द

समाया हुआ था उस मुसकुराहट में। उसने बताया कि घर का सारा सामान बिक गया। आज आखिरी टूटी हुई चारपाई बेच कर उसने चने खरीदें हैं। वह कौन लोग थे जिन्होने तुम को मारा था। उसने बताया कि एक तो उसी के गाँव का है और उसी ट्रेन से आता जाता है। बहुत सारे रूपयों का चना उधार खा चुका है। उस को हम ने चना देने से मना कर दिया था। देख लेजिये उसने हमें उल्टा पिटवा दिया। चने वाले ने बताया कि उस पर बड़ी ज़िम्मेदारी है। उस की एक बहन है जिस की उसे शादी करनी है और फिर उस के बाद वह अपना घर भी बसायेगा। ये कहते हुये वह शर्मा गया था। चने वाले का स्टेशन आ गया था। बाबूजी चलते हैं। ये कह कर वह उठा था लेकिन फिर एक दम सर पकड़ कर बैठ गया। उसे चक्कर आ गया। मैं ने उसे पकड़ कर गाड़ी से नीचे उतरने में मदद की। मैं ने सोचा कि कल जब चने वाले से मुलाक़ात होगी तो उसे कुछ रूपये देदूंगा ताकि वह इस दौरान आराम करे और अपना खर्च चला सके। मैं उस को आज पैसे देने के लिये तैयार था लेकिन इत्तिफाक़ से आज अपनी जेब खाली थी। लेकिन अगले दिन चने वाला का इन्तिज़ार ही करता रहा। उस के बाद मेरी ट्रेनिंग के तीन महीने पूरे हो गये। और चने वाला नहीं आया और न ही मुझे चने वाला की कोई खबर मिला। ट्रेन में चना बिकना खत्म नहीं हुआ और कई दूसरे चने बेचने वाले आ गये थे।

इस वाक़्ये को पांच साल से ज़्यादा हो गये हैं। अक्सर चने वाले का ख़्याल मुझे आ जाता है। उस ने चना बेचना छोड़ दिया हो या कोई दूसरा काम करने लगा हो। पता नहीं वह अपनी बहन की शादी कर पाया या नहीं। या क्या पता वह अब ज़िन्दा भी है या नहीं। कहीं उसका हशर बाप जैसा न हुआ हो। इस से ज़्यादा मैं कुछ नहीं सोच पाता। चने वाले की याद आज भी मेरे ज़हन में ताज़ा है।

★★★